ASTRO ARPITA NATH

दूसरे विवाह की संभावनाएं - केस स्टडी

Arpita Nath द्वारा · केस स्टडीज़ · 2026-09-18

दूसरे विवाह की संभावनाओं का विश्लेषण करने के लिए **9वें भाव (दूसरे विवाह का प्राथमिक भाव, जो 7वें से तीसरा भाव है)**, 9वें भाव के स्वामी (नवमेश), द्वि-स्वभाव (Dual) राशि के प्रभावों और दूसरे भाव (पारिवारिक विस्तार) की स्थिरता का मूल्यांकन करना आवश्यक होता है।

यहाँ एक विस्तृत विश्लेषण दिया गया है कि यह विशिष्ट कुंडली दूसरे विवाह को किस प्रकार दर्शाती है।

1. विवाह भावों पर द्वि-स्वभाव राशि का प्रभाव

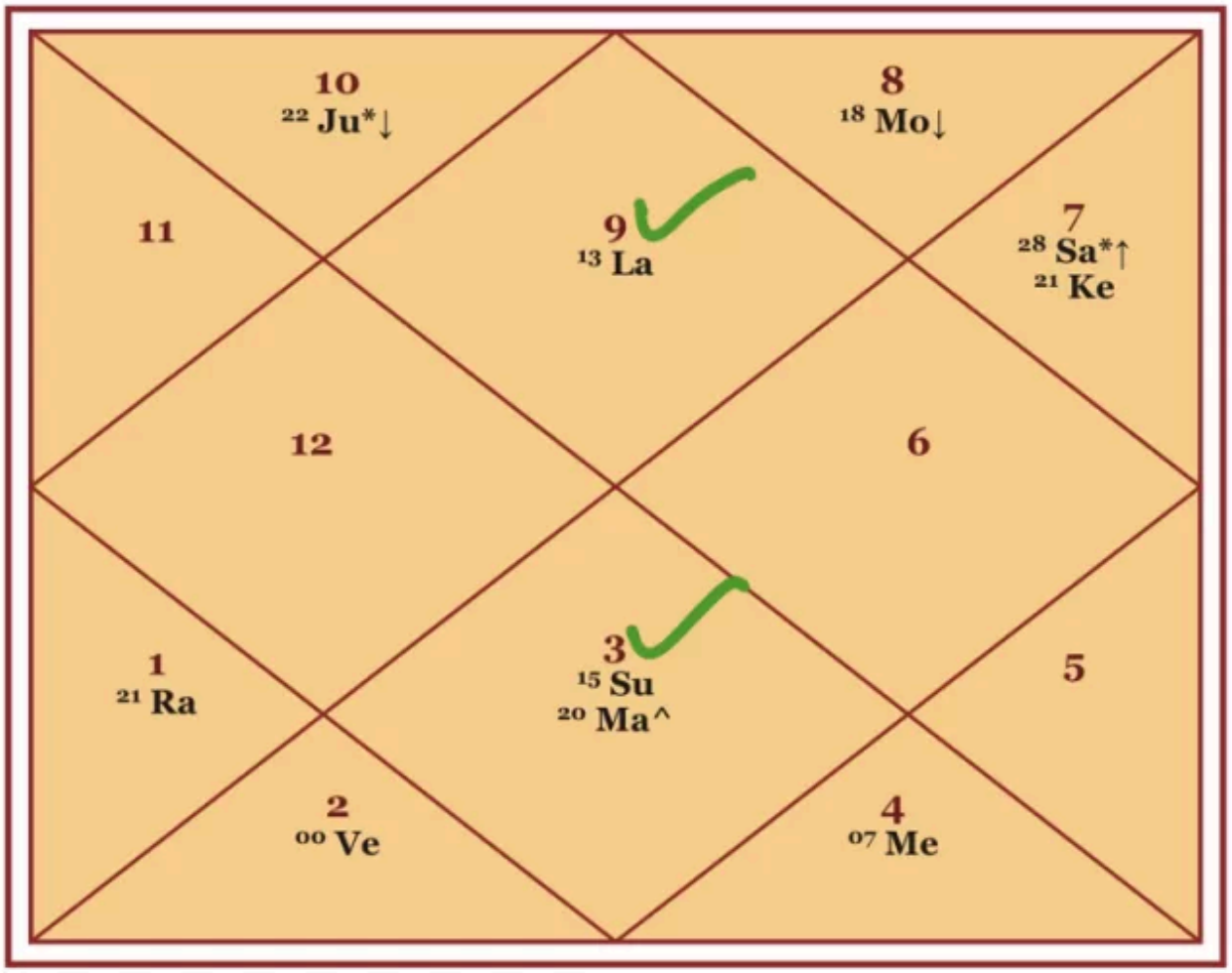

• **7वें भाव में मिथुन राशि:** प्रथम विवाह का 7वां भाव मिथुन राशि में पड़ता है, जो एक द्वि-स्वभाव राशि है। द्वि-स्वभाव राशियाँ स्वाभाविक रूप से जीवन में कई अध्यायों, परिवर्तनों या एक से अधिक महत्वपूर्ण संबंधों का संकेत देती हैं।

• **धनु लग्न:** प्रथम भाव (लग्न) भी एक द्वि-स्वभाव राशि है, जो जीवन के महत्वपूर्ण सबकों के बाद अनुकूलनशीलता और बड़े जीवन परिवर्तनों को बल प्रदान करता है।

2. 9वें भाव की स्थिति (दूसरे विवाह का प्राथमिक भाव)

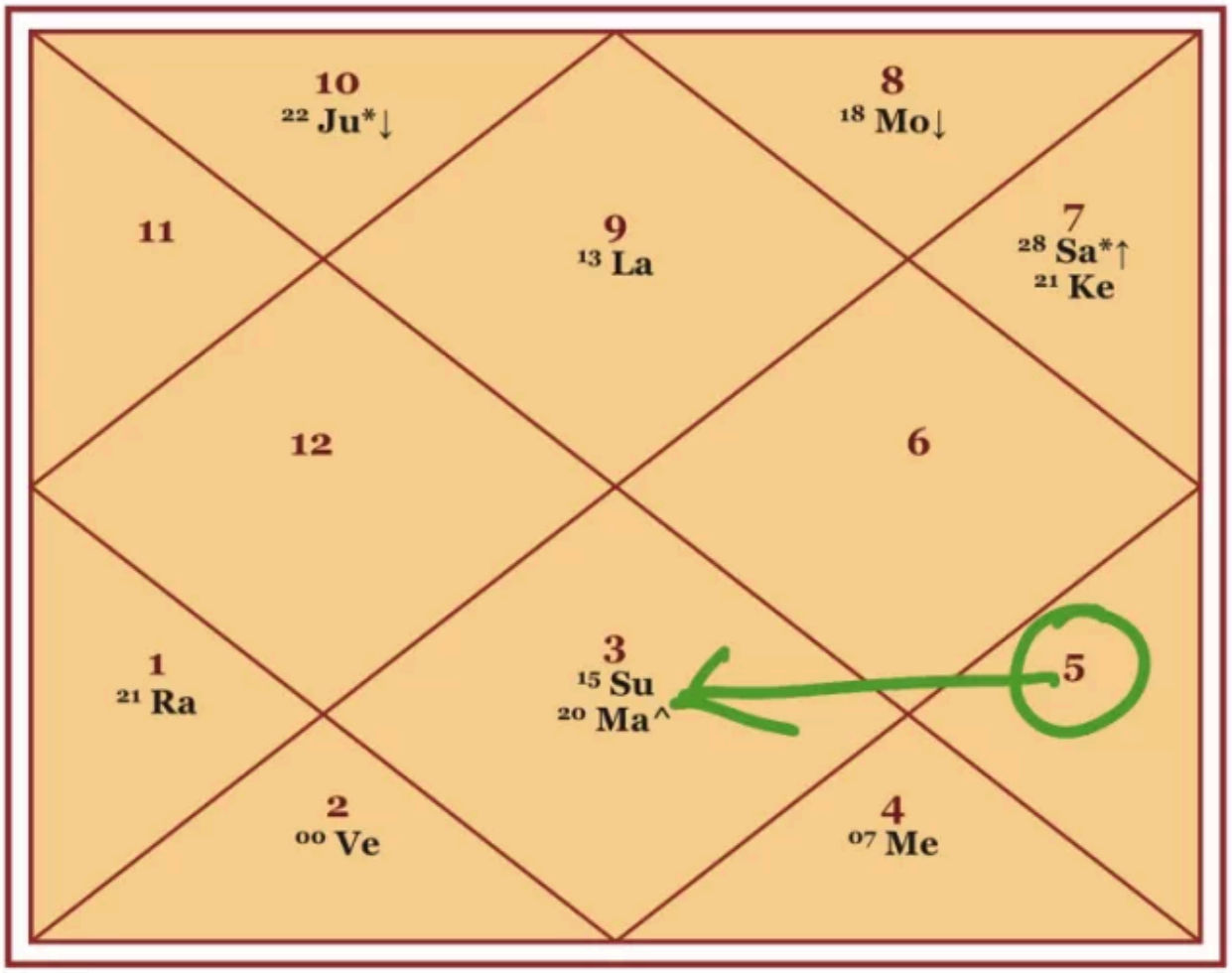

• **9वें भाव की राशि:** सिंह (राशि 5)।

• **नवमेश की स्थिति:** 9वें भाव के स्वामी सूर्य हैं, जो मंगल के साथ 7वें भाव (मिथुन) में स्थित हैं।

• **प्रथम और द्वितीय संबंध के बीच सीधा संबंध:** 7वें भाव में नवमेश (सूर्य) की स्थिति पहले रिश्ते और दूसरे रिश्ते के बीच एक सीधा ज्योतिषीय सेतु बनाती है। यह इंगित करता है कि पहले अनुबंध के समापन या समाधान के बाद ही दूसरे संबंध का मार्ग खुलता है।

3. 7वें भाव के स्वामी की तुलना में 9वें भाव के स्वामी का बल

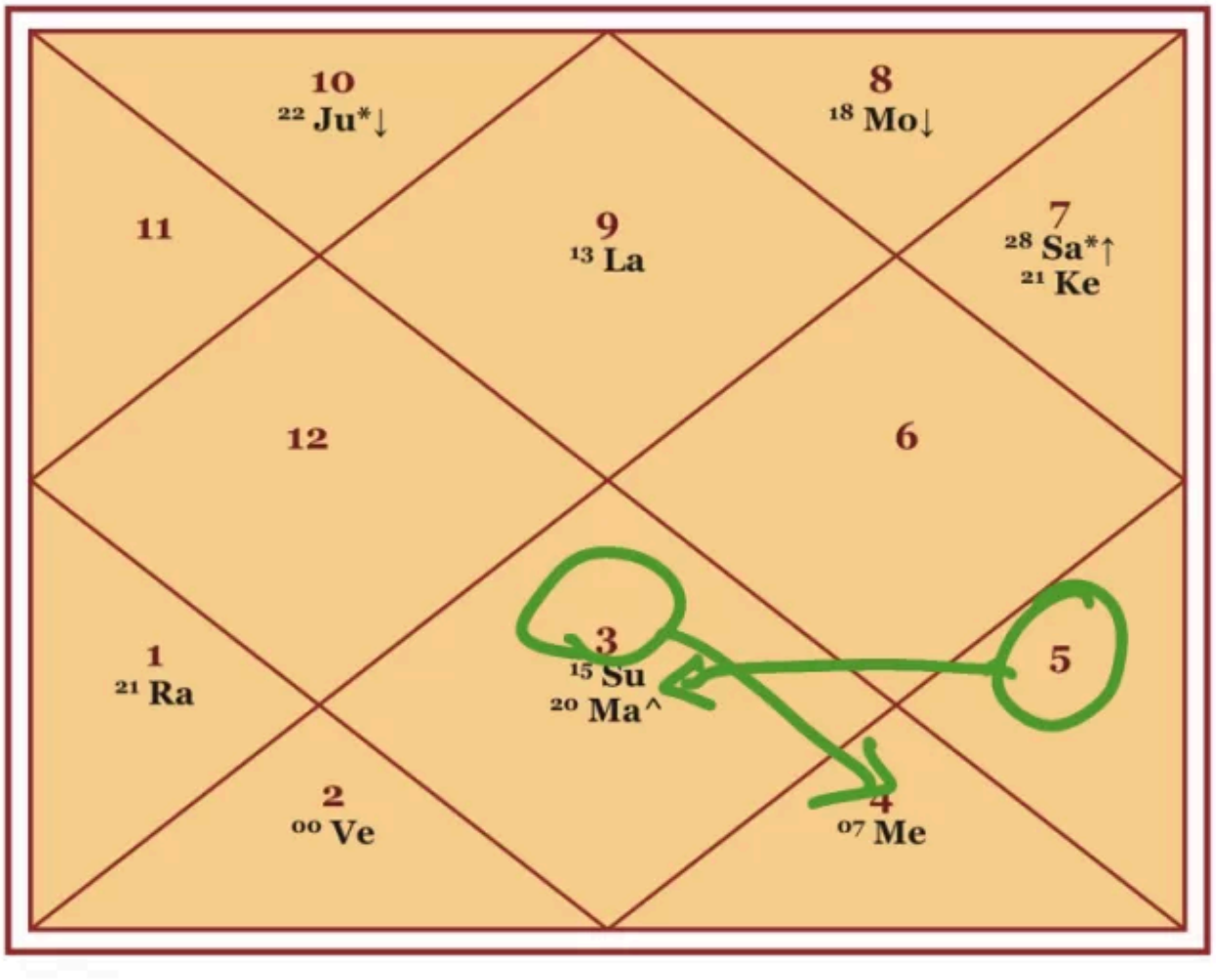

ज्योतिषीय सिद्धांतों के अनुसार, दूसरा विवाह तभी स्थिर होता है जब 9वां भाव/नवमेश 7वें भाव/सप्तमेश की तुलना में बेहतर स्थिति में हो या अधिक सकारात्मक ऊर्जा रखता हो:

• **सप्तमेश (बुध):** 8वें भाव (उथल-पुथल और अचानक अंत का भाव) में स्थित है, जो पहले विवाह की दीर्घायु को कमजोर करता है।

• **नवमेश (सूर्य):** 7वें भाव में स्थित है। यद्यपि यह उग्र है, फिर भी नवमेश सक्रिय है और एक महत्वपूर्ण केंद्र भाव में मजबूती से स्थित है, जो जातक को अपने व्यक्तिगत जीवन को नए सिरे से संवारने का उत्साह और अवसर प्रदान करता है।

4. एक सफल दूसरे विवाह के लिए अनुकूल कारक

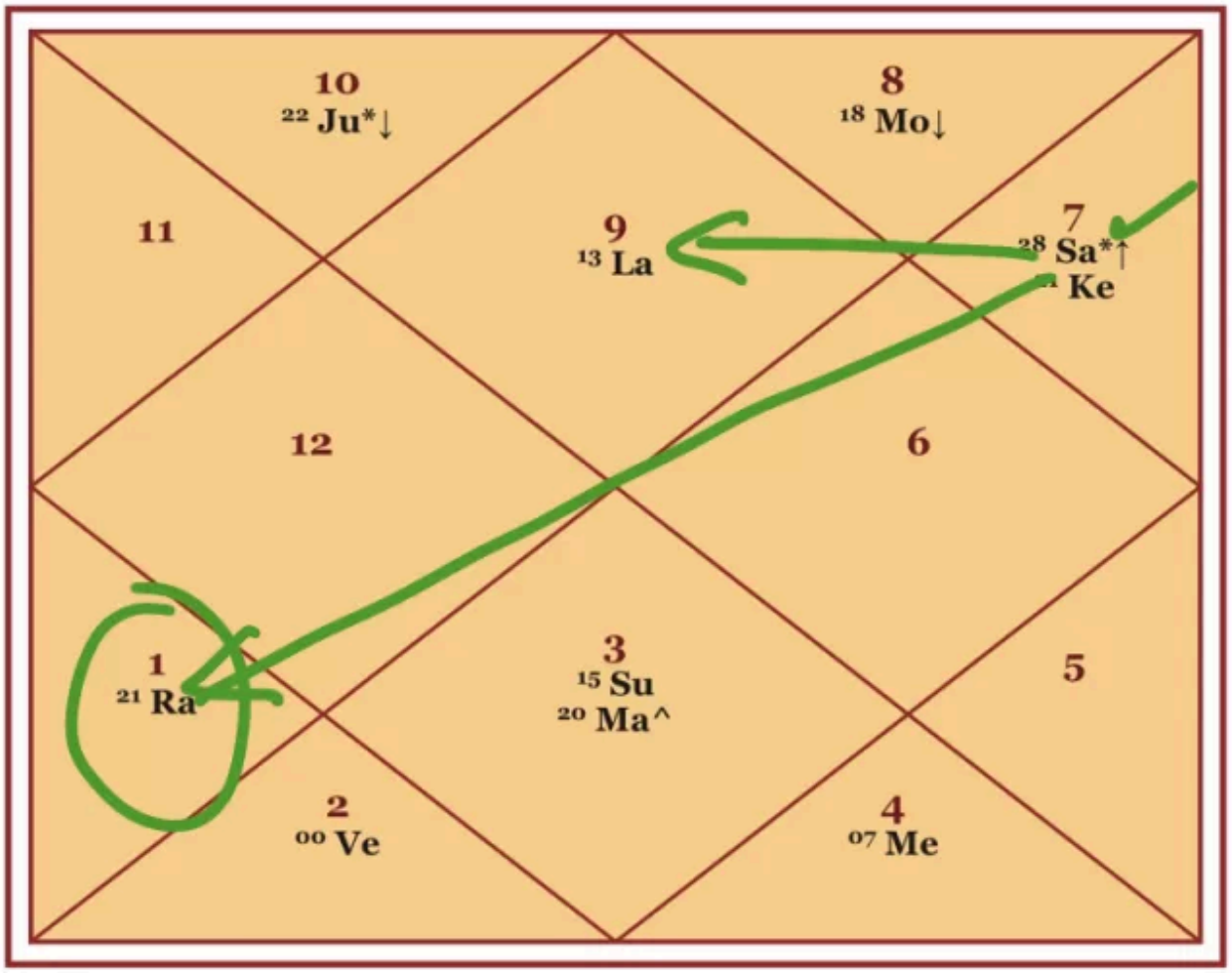

• **उच्च के शनि की दृष्टि:** शनि 11वें भाव (तुला राशि/राशि 7) में केतु के साथ उच्च (Sa↑)* के हैं। शनि अपनी तीसरी दृष्टि सीधे प्रथम भाव (लग्न) पर और अपनी 7वीं दृष्टि 5वें भाव (मेष/राहु) पर डालते हैं। उच्च का शनि जीवन के उत्तरार्ध में परिपक्वता, भावनात्मक मजबूती और व्यावहारिक अपेक्षाएं प्रदान करता है। परिपक्व उम्र और समझदारी के साथ किया गया दूसरा विवाह टिकने की कहीं अधिक संभावना रखता है।

• **5वें भाव में राहु:** 5वें भाव में राहु एक गैर-पारंपरिक दूसरे विवाह का संकेत देता है - संभवतः किसी भिन्न संस्कृति, पृष्ठभूमि के व्यक्ति से या किसी ऐसे व्यक्ति से जो पहले से तलाकशुदा अथवा विधुर/विधवा हो।

5. दूसरे विवाह में कम करने योग्य प्रमुख चुनौतियाँ

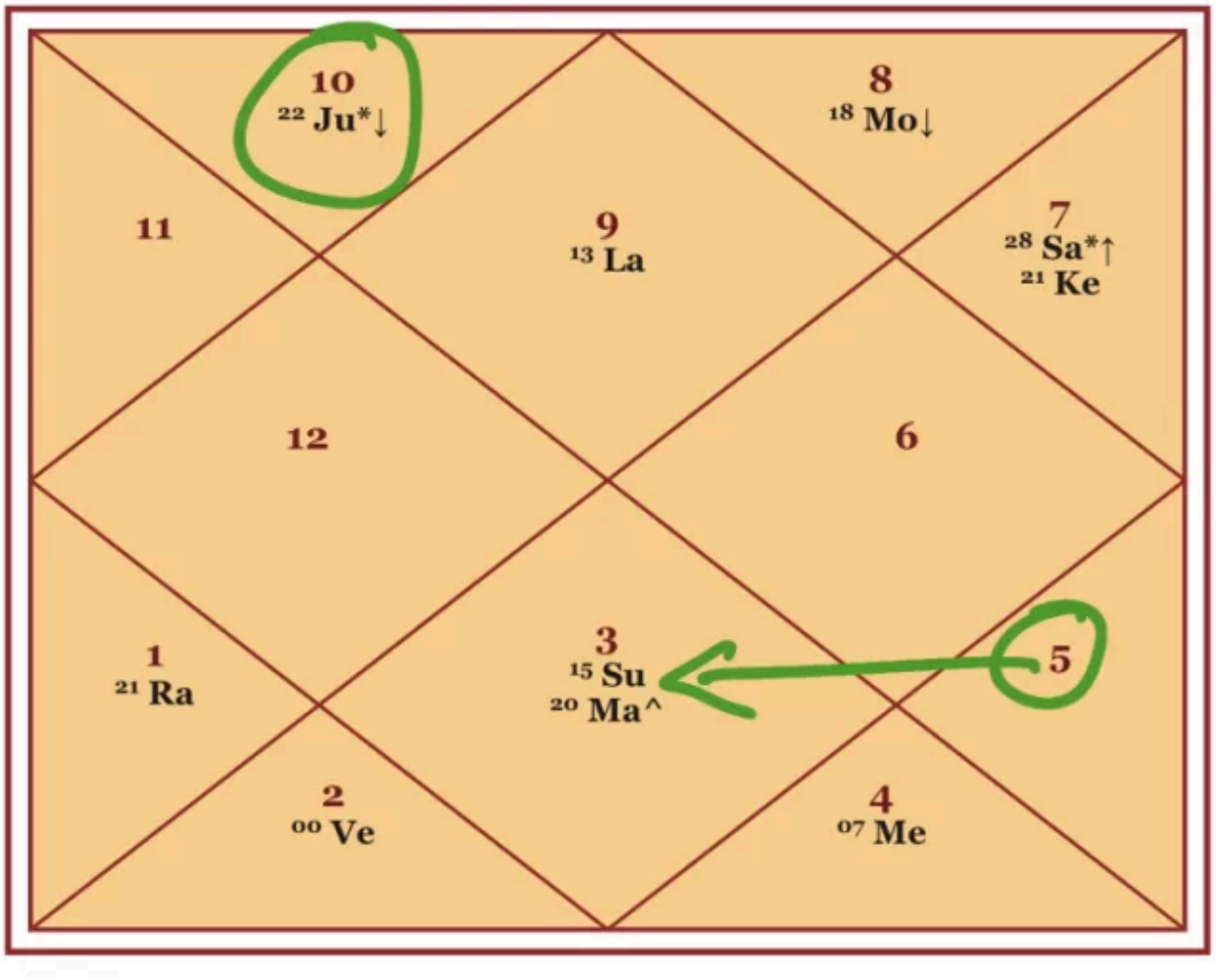

• **स्वभाव पर नियंत्रण (सूर्य + मंगल):** चूंकि नवमेश (सूर्य) 7वें भाव में मंगल के साथ स्थित है, इसलिए प्रभुत्व जमाने, अहंकार या अत्यधिक अपेक्षाएं रखने की प्रवृत्ति में सुधार की आवश्यकता बनी रहती है। सचेत बातचीत और अहंकार से होने वाले टकरावों से बचना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

• **बृहस्पति को मजबूत करना:** बृहस्पति (पति कारक) दूसरे भाव में नीच के हैं। भावनात्मक धैर्य, आपसी सम्मान और साझा पारिवारिक मूल्यों पर काम करने से पुराने तौर-तरीकों की पुनरावृत्ति को रोका जा सकेगा।

यह कुंडली दूसरे विवाह की स्पष्ट और प्रबल संभावना दर्शाती है। यद्यपि 8वें भाव में सप्तमेश की स्थिति के कारण पहला विवाह प्रभावित होता है, लेकिन मजबूत द्वि-स्वभाव राशि का प्रभाव और नवमेश की स्थिति जीवन में आगे चलकर एक अधिक परिपक्व, व्यावहारिक और स्थायी दूसरे संबंध के लिए एक स्पष्ट मार्ग प्रशस्त करती है।

---

https://astroarpitanath.com/hindi/second-marriage-possibilities/
ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।